*गणेश दत्त महाविद्यालय, बेगूसराय

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा*

स्नातकोत्तर (हिन्दी) पाठ्यक्रम

PROGRAMME OUTCOME

- हिंदी भाषा के छात्र हिंदी भाषा के विभिन्न पहलुओं, व्याकरण, लेखन, और संवादात्मक कौशलों को समझ और विकसित कर सकेंगे।
- साहित्यिक अध्ययन से छात्र हिंदी साहित्य के विभिन्न काल, रचनाकार, और कृतियों का अध्ययन करने के माध्यम से साहित्यिक ज्ञान का विस्तार कर सकेंगे।
- संस्कृति और भाषा के संबंध को और हिंदी भाषा की संस्कृति और सांस्कृतिक विरासत के साथ उसके भाषिक संबंधों को समझ सकेंगे।
- शिक्षा में हिंदी का उपयोग कर छात्र भाषा के शिक्षण-सीखने में हिंदी का उपयोग करने की कला सीख सकेंगे।
- संशोधन और प्रोजेक्ट्स छात्रों में शोध-प्रवृत्ति विकसित कर और अपने अध्ययन क्षेत्र में विशेष विषयों पर प्रोजेक्ट्स करने के लिए प्रोत्साहित कर सकेंगे।

● स्नातकोत्तर हिंदी का पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में हिंदी भाषा और साहित्य के विविध आयामों को समझने में सहायक है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी भारत की सांस्कृतिक बहुलता को बहुत अच्छे ढंग से समझ सकते हैं।

• हिंदी साहित्य के इतिहास की विकासोन्मुख प्रवृत्ति को या पाठ्यक्रम समझने में मदद करता है। विभिन्न काल खंडों में विभाजित एवं नामों से सुशोभित हिंदी साहित्य का इतिहास अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, और धार्मिक परिस्थितियों का यथार्थपरक ढंग से मूल्यांकन करता है, साथ ही हिंदी भाषा की विकसनशील प्रवृत्ति और व्याकरण को समझने में यह पाठ्यक्रम मदद करता है।

•हिंदी भाषा के विकास के विभिन्न चरणों एवं देवनागरी लिपि की विशेषताओं से विद्यार्थियों को अवगत कराता है। साहित्येतिहास दर्शन एवं साहित्येतिहास लेखन की परंपरा से विद्यार्थियों को परिचित कराता है।

• समाज और राष्ट्र के निर्माण में हिंदी साहित्यकारों के अवदान से विद्यार्थियों को प्रेरित करता है।

• भारतीय साहित्य एवं पश्चिमी साहित्य के अंतर्संबंधों के अध्ययन के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर विभिन्न साहित्यिक आंदोलन के स्वरूप, महत्व और प्रभावों को समझने में यह पाठ्यक्रम सक्षम है।

• यह पाठ्यक्रम हिंदी के अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, प्रयोजनमूलक हिंदी और जनसंचार के विभिन्न साधनों के अध्ययन के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य के आयाम को विस्तार देता है।

• हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक और संरचनात्मक समझ विकसित होगी। सामाजिक समस्याओं एवं विसंगतियों को पाट समरस समाज के निर्माण के लिए के लिए विद्यार्थी प्रेरित होंगे।

• यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में साहित्यिक रसास्वादन का विकास करता है।

●विद्यार्थियों के मन में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति सम्मान एवं प्रेम विकसित करता है।

स्नातकोत्तर (हिन्दी) पाठ्यक्रम

COURSE OUTCOME

स्नातकोत्तर सेमेस्टर: 1

CC-1

<u>भाषा व लिपि: उद्भव एवं विकास</u>

• विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और अभिलक्षणों का बोध कराना।

• विद्यार्थियों को मानवीय संप्रेषण के सर्व प्रभावी माध्यम के रूप में भाषा के महत्व और कार्य प्रक्रिया (सामाजिक और मनोवैज्ञानिक) का बोध हो सकेगा।

• भाषा विज्ञान विषय तथा उसके अंग एवं शाखाओं से परिचित कराना।

• भाषा, ध्वनि एवं अर्ध परिवर्तन के कारणों एवं दिशाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

• लिपि का इतिहास एवं देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं मानकीकरण से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

• हिंदी भाषा (अपभ्रंश, अब पुरानी हिंदी अवधी एवं खड़ी बोली) के क्रमिक विकास और उसकी भाषिक संरचना एवं साहित्यिक

भाषा के रूप में विकास का बोध प्राप्त कर सकेंगे।

• विद्यार्थी अपने इतिहास, संस्कृति और सामाजिक ताने-बाने आदि को भाषा के जरिए अभिव्यक्त और संरक्षित करने में समर्थ हो सकेंगे।

●विद्यार्थियों की भारत की भाषाई बहुलता का बोध होगा, जो उनके लोकतांत्रिक विवेक के विकास में मददगार होगा।

• 19वीं सदी के हिंदी आंदोलन और हिंदी भाषा के स्वरूप से परिचित होंगे।

• विद्यार्थी देश की आजादी में भाषा के तौर पर हिंदी की भूमिका और महत्व एवं स्वतंत्र भारत की राजभाषा और हिन्दी की विशेषताओं से परिचित होगा

CC-2

इतिहास दर्शन, साहित्येइतिहास दर्शन व हिंदी साहित्येइतिहास लेखन की परंपरा

* विद्यार्थी इतिहास दर्शन विषय की स्थापना किन तथ्यों के आधार पर हुई यह जान सकेंगे और भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण को तुलनात्मक रूप से समझ सकेंगे। समय-समय पर विद्वानों के दृष्टिकोण में होने वाले परिवर्तन को भी समझ सकेंगे।*इतिहास लेखन की पद्धति को जान सकेंगे एवं अपने दृष्टिकोण की स्थापना का विवेक विकसित कर सकेंगे।

* साहित्य के इतिहास के विधेवाद, मार्क्सवाद एवं संरचनावाद के प्रमुखसिद्धांतों को विश्लेषणात्मक रूप से समझ सकेंगे। इससे उनकी व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक समझ विकसित हो सकेगी। * इतिहास लेखन की परंपरा को आरंभ से अब तक शोध परक दृष्टिकोण से समझ सकेंगे।

* छात्र/छात्राएं इतिहास लेखन की क्या समस्या है एवं उनका निराकरण कैसे हो सकता है एवं एक वैज्ञानिक इतिहास लेखन की आवश्यकता को समझते हुए उसे नए रूप में किस प्रकार से लिखा जा सकेगा यह दृष्टिकोण उन में विकसित हो सकेगा।

*काल विभाजन के आधार को समझते हुए सर्वसम्मति से स्वीकृत काल विभाजन के प्रति अपना दृष्टिकोण कायम कर सकेंगे। * साहित्यिक प्रवृत्तियों का अंतरसंबंध, सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश परंपरा, संदर्भ इन सभी के अध्ययन का लाभ अपने शोध में छात्र-छात्राएं उठा सकेंगे।

*विद्यार्थी जान सकेंगे कि इतिहास और आलोचना में क्या अंतर है ? आलोचना क्या है ? साहित्य और इतिहास के संबंध क्या है? इतिहास और आलोचना के बीच के अंतर को समझ सकेंगे। साथ ही आलोचना के संदर्भ में इतिहास की सार्थकता को जान सकेंगे। * पाठ के अध्ययन विश्लेषण से छात्रों में एक नई शोध परक दृष्टि विकसित हो सकेगी एवं वे अपने दृष्टिकोणों की स्थापना में सक्षम हो सकेंगे।

CC-3

हिंदी साहित्य का इतिहास आरम्भ से रीतिकाल तक

*प्रथम ईकाई में हिंदी साहित्य की आरंभिक स्थिति तथा तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक परिस्थितियों के बारे में विस्तृत कारी प्रदान करना आदिकाल के नामकरण से जुड़े प्रमुख विद्वानों के कथन और प्रमुख कारकों, उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों एवं प्रमुख कवियों के साहित्यिक अवदान के विस्तृत अध्ययन में यह पाठ सहायक है।

● दूसरी इकाई में हिंदी साहित्य के स्वर्ण काल यानी भक्ति काल का सामान्य परिचय के साथ-साथ सामाजिक आर्थिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का परिचय प्रदान करना, भक्ति आंदोलन के प्रेरक तत्व उसका

दार्शनिक आधार, अखिल भारतीय स्वरूप लोक जागरण के रूप में उसका महत्व, साथ ही साथ हिंदी के सगुण और निर्गुण कवि जैसे कबीर, तुलसी सूर जायसी आदि महान कवियों के जीवन से उन्हें प्रेरित करना।

• तीसरी इकाई में निर्गुण भक्ति का सामाजिक आधार एवं प्रमुख निर्गुण कवियों के साहित्यिक अवदान साथ ही भारत में सूफी मत का उदयदार्शनिक आधार और विकास एवं प्रमुख सूफी कवियों के साहित्यिक अवदान के विस्तृत अध्ययन में यह पाठ सहायक है। •चौथी इकाई में भक्ति काल की प्रमुख काव्य धारा सगुण भक्ति के स्वरूप एवं विशेषताओं से विद्यार्थियों को एरिचित कराना।

• पाचवी इकाई में रीतिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि से परिचित कराना। रीतिबद्ध रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त कवि जैसे केशव, बिहारी, पनानंद, भूषण आदि कवियों का परिचय कराना।

CC-4

<u>आरम्भिक हिंदी कविता</u>

आदिकाल की सामान्य जानकारी से अवगत हो सकेंगे।

• आदिकालीन साहित्य से परिचित हो सकेंगे।

• आदिकाल के प्रमुख रचनाकारों को जान सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत पृथ्वीराज रासो, संदेश रासक, विद्यापति पदावली, कीर्तिलता के पाठ को समझ सकेंगे।

AECC-1 -- पर्यावरण स्थिरता और स्वच्छ भारत अभियान गतिविधियां

इस पाठ्यक्रम में छात्र सीखेंगे की सामान्य रूप से परिवेश की देखभाल कैसे करें।

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी को पर्यावरण को स्वच्छ रखने के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनाएगा।

पर्यावरण के ज्ञान से छात्रगण परिचित हो सकेंगे।

छात्रगण अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखने के विषय में अवगत हो सकेंगे।

स्नातकोत्तर सेमेस्टरः 2

CC-5

<u>आधुनिक हिन्दी काव्य</u>

• हिन्दी साहित्य का इतिहास और आधुनिक काल से परिचित हो सकेंगे।

भारतेन्दु युग और भारतेन्दु मंडल को जान सकेंगे।

• खड़ी बोली हिन्दी गद्य का विकास, फोर्ट विलियम कॉलेज एवं भारतेन्दु युगीन साहित्य की प्रमुख विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, सरस्वती पत्रिका और राष्ट्रीय काव्यधारा से परिचित हो सकेंगे।

हिन्दी में आधुनिक गद्य विधाओं का विकास आलोचना, निबंध, नाटक, उपन्यास, कहानी, आत्मकथा. जीवनी. यात्रा-वृतांत एवं संस्मरण को जान सकेंगे।

• प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता को समझ सकेंगे।

• अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, समाजवाद से अवगत हो सकेंगे।

उत्तरछायावाद, नवगीत को समझ सकेंगे।

• स्त्री-लेखन, दलित लेखन, प्रवासी साहित्य से अवगत हो सकेंगे।

आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास में संस्थाओं की भूमिका को जान सकेंगे।

CC-6

<u>मध्यकालीन हिंदी कविता (कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, रैदास, बिहारी और घनानंद)</u>

• कबीर का जीवन, उनका दर्शन उनके सामाजिक विचार एवं उनकी भाषा और कविता की अंतर्वस्तु से विद्यार्थियों को परिचित कराना। भ्रमरगीत का आधार सोत, अमरगीत का साहित्यिक एवं दार्शनिक पक्षe सूर की काव्य भाषा एवं उनके विभिन्न पदों के आधार पर भ्रमरगीत की अन्य विशेषताओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

• तुलसीदास का जीवन और उनकी भक्ति उनके विभिन्न दोहों के आधार पर रामचरितमानस (बालकोट) का महत्व एवं भाषा शैली से विद्यार्थियों को परिचित कराना

• मीरा का जीवन संघर्ष और उनकी भक्ति भावना के वैशिष्ट्य से विद्यार्थियों को परिचित कराना। उनके पदों के आधार पर उनके काव्य -सौंदर्य पर प्रकाश डालना

• रैदास का जीवन और उनकी भक्ति भावना से छात्र-छात्राओं को परिचित कराना।

• बिहारी का जीवन और उनके दोहों की विशेषताओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

● घनानंद का जीवन एवं उनके विभिन्न कवित और सवैयों की विशेषताओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
• विद्यार्थियों में पाठ आधारित अध्ययन के द्वारा कविता की व्याख्या उसका विशेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित होगी।

CC-7

<u>संस्कृत साहित्य का इतिहास</u>

• इस पत्र के अंतर्गत विद्यार्थी संस्कृत साहित्य के उद्भव एवं विकास से परिचित होंगे।.

• विद्यार्थी संस्कृत भाषा के सौंदर्य से परिचित होंगे।

इस पत्र में विद्यार्थी संस्कृत साहित्य के अंतर्गत संस्कृत महाकाव्य की परंपरा से परिचित हो सकेंगे साथ ही प्रमुख संस्कृत महाकाव्यों, गीतिकाव्यों, नाटकों और गद्यकाव्यों के शिल्प और अंतर्वस्तु से परिचित होंगे।

•संस्कृत साहित्य के महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय कवि कालिदास की रचना मेघदूत के पाठ आधारित अध्ययन के द्वारा कविता की व्याख्या उसका विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित होगी।

CC 8

अस्मितामूलक विमर्श

अस्मिता की अवधारणा, स्वरूप, विभिन्न सिद्धातों और उसके निर्माण की प्रक्रिया और प्रकृति से विद्यार्थी अवगत हो सकेंगे साथ ही इतिहास, धर्म, राष्ट्र और भूमंडलीकरण के संदर्भ में अस्मितामूलक विमर्श के विभिन्न आयामी से हो सकेगा

•अल्पसख्यक विमर्श, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श आदि प्रमुख समकालीन विमर्श केंद्रित संवेदना से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।

• ज्योतित्वा फुले एवं भीमराव अंबेडकर आदि प्रमुख दलित विचारकों के जीवन दर्शन एवं उनके सामाजिक संघर्ष से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।

नए सौदर्यशास्त्र से परिचित हो सकेंगे।

• विद्यार्थी न्याय, समानता एवं अभिव्यक्ति के अधिकारों से वंचित खी, दलित, आदिवासी तथा अन्य समुदाय के संघर्ष और उनकी मुक्ति केस्वर का अध्ययन कर सकेंगे • विभिन्न दलित कविताएं, दलित उपन्यास, ललित आत्मकथाएं एवं स्त्री आत्मकथाओं के पाठ आधारित अध्ययन के द्वारा उसका विश्लेषण और मूल्यांकन कर सकेंगे।

CC-9

उपन्यास

• विद्यार्थी हिंदी उपन्यास के स्वरूप एवं विकास के साथ-साथ स्वाधीनता संग्राम और उसके बाद के भारत के गतिशील सामाजिक सांस्कृतिक या एवं उसकी कलात्मक अभिव्यक्तियों का अध्ययन करेंगे।

•भव्यक्ति, मध्यवर्ग और राष्ट्र के संदर्भ में हिंदी उपन्यासों में उनकी उपस्थिति, महत्व और उसके विविध आयामों का अध्ययन करेंगे। विद्यार्थी आंचलिक और शहरी जीवन को केंद्र बनाकर लिखे गए उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन करेंगे।

• विद्यार्थी पाठ आधारित विभिन्न उपन्यासों के अध्ययन के द्वारा उसका विश्लेषण और मूल्यांकन कर सकेंगे।

• विभिन्न उपन्यासों के अध्ययन से विद्यार्थियों में मानवीय संवेदना का विस्तार होगा।

SEC-1

<u>यौगिक विज्ञान</u>

• यौगिक विज्ञान के इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थीगण योग की परिभाषा से परिचित होंगे, योग्य विभिन्न विचारको जैसे पतंजलि, घेरंड, गौरक्ष आदि के विचारों से अवगत होंगे।

• भक्तियोग, ज्ञानयोग, राजयोग, हठयोग आदि के विषय में जानेंगे।

• यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान समाधि आदि अष्टांग योग के विषय में जानेगें।

उत्तम स्वास्थ्य के लिए यौगिक जीवन शैली को जानेंगे और बीमारी को दूर रखने के प्रबंध को योग

के माध्यम से जानेंगें।

• योग से शरीर मन स्वास्थ्य आदि पर क्या-क्या प्रभाव पड़ता है इसके सूक्ष्म तकनीक को जानेंगें ।

• विभिन्न प्रकार के आसनों के माध्यम से शरीर को स्वस्थ रखने के तरीकों से अवगत होंगें।

• यथा- पवनमुक्तासन, शवासन, मर्कटासन, सिद्धासन, त्रिकोणासन, ताडासन, वज्रासन, सिंहासन, शशांकासन, उष्ट्रासन, सूर्यनमस्कार आदि ।

स्नातकोत्तर सेमेस्टर: 3

CC-10

<u>आधुनिक हिंदी काव्य</u>

• आधुनिकता की अवधारणा और संदर्भों को समझते हुए आधुनिक हिंदी काव्य के साथ इसके अंतसंबंध से अवगत हो सकते।

• खड़ी बोली के उदय, विकास और इससे जुड़े आंदोलन को समझ सकेंगे।

● काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली की विशेषताओं से परिचित हो सकेगे।

• आधुनिक हिंदी काव्य की प्रमुख विशेषताओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना।

• मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'साकेत' का महत्व उसकी अंतर्वस्तु और भाषा शैली से विद्यार्थियों को परिचित कराना। नवम सर्ग के माध्यम से उर्मिला के विरह वर्णन की विशेषताओं पर प्रकाश डालना।

• जयशंकर प्रसाद का जीवन एवं साहित्यिक परिचय कामायनी का दर्शन, प्रतीक योजना और कथा वस्तु से विद्यार्थियों को परिचित कराना। छायावादी दृष्टि से कामायनी का मूल्यांकन करना

• सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जीवन-संघर्ष एवं साहित्यिक परिचयाराग विराग में महाप्राण निराला की संकलित कविता 'राम की शक्ति पूजा', 'सरोज स्मृति', 'तोड़ती पत्थर' और 'सम्राट अष्टम वर्ग के प्रति' की काव्यगत विशेषताओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना

• रामधारी सिंह दिनकर का जीवन एवं साहित्यिक परिचय 'उर्वशी' काव्य की विशेषताओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

• हरिवंश राय बच्चन की प्रतिनिधि कविताओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना

• धूमिल की कविताओं में व्यक्त समकालीन यथार्थ से विद्यार्थियों को अवगत कराना 'मोदीराम' और 'पटकथा' के वैशिष्ट्य से विद्यार्थियों की परिचित कराना

• विद्यार्थियों में पाठ आधारित अध्ययन के द्वारा कविता की व्याख्या, उसका विश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित होगी।

CC-11

<u>पत्रकारिता</u>

• पत्रकारिता परिभाषा स्वरूप एवं भेद को जान सकेंगे।

प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को विस्तृत रूप में समझ सकेंगे।

जनसंचार स्वरूप और भेद से अवगत हो सकेंगे।

मीडिया लेखन समाचार, फीचर, साक्षात्कार और रिपोर्ताज को समझ सकेंगे।

प्रमुख पत्रकारों–भारतेन्दु, मदन मोहन मालवीय, महावीर प्रसाद द्विवेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, प्रेमचंद, शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी, माखनलाल चतुर्वेदी, बनारसीदास चतुर्वेदी, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, राजेन्द्र माथुर, विष्णु पराडकर और प्रभाष जोशी से परिचित हो सकेंगे।

• मीडिया के पारिभाषिक शब्दावली से अवगत हो सकेंगे।

CC-12

<u>उर्दू साहित्य</u>

• विद्यार्थी उर्दू भाषा के उद्भव और विकास से परिचित हो सकेंगे।

• उर्दू काव्य के विभिन्न रूपों से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे

• उर्दू साहित्य की विभिन्न विधाओं के उद्भव और विकास से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे साथ ही महत्वपूर्ण उर्दू साहित्यकारों के साहित्यिक अवदान से अवगत हो सकेंगे।

CC-13

<u>समकालीन हिंदी कविता</u>

• समकालीन हिंदी कविता के उद्भव स्वरूप और उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों से विद्यार्थी परिचित हो सकेगे।

● समकालीन हिंदी कविता के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य का अध्ययन कर सकेंगे

• समकालीन कविता के शिल्प और अंतर्वस्तु से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।

• विद्यार्थी पाठ आधारित विभिन्न समकालीन कविताओं के अध्ययन के द्वारा उसका विश्लेषण और मूल्यांकन कर सकेंगे।

CC-14

<u>काव्यशास्त्र</u>

● भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।

• विद्यार्थी भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य शास्त्रीय दृष्टियों से विवेचित विभिन्न साहित्यांगों के स्वरूप और महत्व से परिचित हो सकेंगे।

• विद्यार्थी रस तथा ध्वनि सिद्धांत की अवधारणा एवं स्वरूप को जान सकेंगे।

●विद्यार्थी भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र के विभिन्न संप्रदायों और प्रमुख वैचारिक स्थानों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। • विद्यार्थियों में साहित्यास्वाद और साहित्य समीक्षा के लिए उपयोगी ज्ञान व प्रविधियों का विकास हो सकेगा।

AECC-2

<u>मानवीय मूल्य और पेशेवर नैतिकता</u>

इस पाठ्यक्रम के तहत नैतिक मुद्दों की विविधता, नैतिकता और नैतिकता के सिद्धांत से अवगत होंगे।

छात्र समाज में सद्भाव को समझना, ईमानदारी, आत्मविश्वास नैतिकता के उपसमुच्चय के रूप में नैतिकता से अवगत हो पाएंगे।

विद्यार्थी गण भेदभाव और पूर्व न्यायिक कर्मचारी व्यवहार प्रकृति में सद्भाव को समझना एवं मानवीय मूल्यों की प्रकृति से परिचित हो सकेंगे।

इसमें विद्यार्थी जोखिम लाभ विश्लेषण अधिकार का सम्मान व्यावसायिक अधिकार बौद्धिक संपदा अधिकार

आदि से परिचित हो सकेंगे।

इसमें विद्यार्थी पर्यावरण के अनुकूल उत्पादन, सार्वभौमिक मानव व्यवस्था को बढ़ाने के लिए व्यवसायिक क्षमता एवं विशिष्ट समग्र प्रौद्योगिकी आदि प्रबंधन से वे अवगत हो सकेंगे।

विद्यार्थी लिंग परिभाषा प्रकृति और विकास संस्कृति परंपरा श्रम का लिंग आधारित विभाजन आदि से परिचित हो सकेंगे।

छात्र न्याय और मानव अधिकार लिंग संवैधानिक और कानूनी दृष्टिकोण लिंग उभरते हुए मुद्दे और चुनौतियों में अवगत हो सकेगे।

स्नातकोत्तर सेमेस्टर-4

EC-1(ख)

कहानी

• हिंदी कहानी के उद्भव स्वरूप और उसकी विकास-यात्रा से विद्यार्थी परिचित होंगे।

• आधुनिक गद्य विधा के रूप में हिंदी कहानी की पहचान और कहानी के वैश्विक परिदृश्य से विद्यार्थी परिचित होंगे।

• प्रेमचंद को आधार बनाकर प्रेमचंद पूर्व प्रेमचंद युगीन और प्रेमचंदोत्तर कहानी की प्रमुख प्रवृत्तियों तथा प्रमुख रचनाकारों और उनकी कृतियों से विद्यार्थी अवगत होंगे।

• हिंदी कहानी के नवीन स्वर विशेषकर दलित कहानियों और स्त्री विमर्श से संबंधित कहानियों की विशेषताओं को विद्यार्थी समझ सकेंगे।

• हिंदी कहानी की विकास यात्रा में आने वाली महत्वपूर्ण कहानियों के मूल पाठ और उनकी समीक्षा से विद्यार्थी अवगत हो सकेंगे।

EC - II (ग)

आधुनिक हिंदी रंगमंच एवम नाटक

इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी साहित्य की महत्वपूर्ण विधा नाटक के उद्भव, विकास,स्वरूप उसकी विकास यात्रा से विधार्थी परिचित होंगे।

आधुनिक गद्य विधा के रूप में हिंदी नाटक की पहचान और उसके वैश्विक परिदृश्य को विद्यार्थी जान पाएंगे।

प्रसाद को आधार बनाकर प्रसादपूर्व , प्रसादयुगीन और प्रसादोत्तर नाटक एवं नाटककार से विधार्थी अवगत होंगे।